M.A. Semester – I
Philosophy CC-01
Unit – V

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Theory of Error according to Mimansa Philosophy (Part-I)

साधारणतः भारतीय दर्शन में मिथ्यापन सिद्धान्त की चर्चा की गयी है वास्तव में देखा जाय तो सत्य और असत्य दोनों सापेक्ष पद है एक के बिना दूसरे की कामना नहीं की जा सकती। यह सत्य है कि ज्ञान प्रक्रिया में भ्रम हो सकता है, पर सत्य की परख असत्य की परख में होती है और असत्य की परख सत्य की पृष्ठभूमि में होती है इस प्रकार सत्य और असत्य एक दूसरे के सूचक हैं। इस प्रकार मिथ्यात्मक ज्ञान पर भी भारतीय दर्शन में विशद विवेचना की गयी है। साधारणतः इस सम्बन्ध में दो विचार मिलते हैं—

(1) वस्तुवादी
(2) प्रत्ययवादी

वस्तुवादी विचारक भ्रम का अस्तित्व मन के परे वस्तु जगत में मानता है इसके विपरीत प्रत्ययवादी सिद्धान्त का कहना है कि भ्रम का अस्तित्व मन से परे नहीं बल्कि मन पर ही निर्भर रहता है।

वस्तुवादी विचारक प्रमाकर ज्ञान को स्वतः प्रमाण मानते हैं अर्थात् ज्ञान की प्रमाणिकता उसके उत्पादक उपाधियों में ही निहित रहती है अतः इसके अनुसार ज्ञान स्वभाविक रूप से सत्य होता है। मीमांसकों का कहना है कि

कोई भी ज्ञान सत्य होता है प्रभाकर का कहना है कि ~~किसी~~ किसी भी सत्य - असत्य ज्ञान को हम पहले मानते हैं और उसी के अनुसार हमारा शारीरिक action या विश्वास हो जाता है, भले हीं वह भ्रम हीं क्यों न हो, इसकी अनुभूति बाद के ज्ञान द्वारा होती है, जैसे रस्सी में सर्प का आभास या यह चान्दी नहीं सिप खण्ड है, इत्यादि। अध्यास~~के~~रूप से वे सत्य मानते हैं भले हीं बाद की अनुभूति के द्वारा उसका सही ज्ञान क्यों न हो। इसमें पहले हम विश्वास करने लगते हैं। अतः प्रभाकर ज्ञान को स्वतः प्रमाण मानते हैं। अब प्रश्न उठता है कि क्या भ्रम का अस्तित्व नहीं है? जब ज्ञान स्वतः प्रकाशमान हो तो भ्रम की उत्पत्ति कैसे होती है?

मीमांसकों का कहना है कि उसका अस्तित्व है। जब कोई दूषित ज्ञान, इन्द्रिय दोष या वातावरण के दोष के कारण उसकी अनुभूति हमें वस्तु के अनुसार न होकर उससे जब भिन्न होती है तो इस तरह का हमें ज्ञान होता है जिसे हम सब भ्रम सम्बन्धी ज्ञान कहते हैं। जैसे- अन्धेरे या इन्द्रिय दोष के कारण रज्जू में सर्प का आभास होना। इस माने में भ्रम या मिथ्यात्मक ज्ञान का अस्तित्व है, जिसका ज्ञान दूषित वातावरण के चलते अनुभव होता है। इसी को प्रभाकर अख्याति सिद्धान्त कहते हैं। इस सिद्धान्त से साबित होता है कि भ्रम की अनुभूति का मूल कारण है, दो अनुभूतियों के बीच का अभाव। इसलिए इस सिद्धान्त को भेदाग्रह भी कहते हैं। कहने का तात्पर्य है कि अनुभूति में एक ज्ञानात्मक क्रिया नहीं होती है यानी कि दो क्रियाएँ एक साथ होती और ये दोनों भिन्न - भिन्न ज्ञानात्मक क्रियाएँ होती हैं।

जब इन दोनों प्रकार की अनुभूतियों के बीच हमें अन्तर का पहचान नहीं होता है तो हमें भ्रम की अनुभूति होती है। विभेदाग्रह के कारण विभिन्न अनुभूतियों के बीच अज्ञानता के कारण भ्रम की अनुभूति होती है। जैसे कभी-कभी पानी में खड़ी छड़ी टेढ़ी मालूम होती है, जिसका मुख्य कारण दो भिन्न अनुभूतियों की अज्ञानता है, क्योंकि साक्षात अनुभूति विषय जो भी हमारे सामने है, वह सीधी छड़ी है, किन्तु किरणों एवं तालाब आदि के जल के कारण छड़ी टेढ़ी मालूम पड़ती है। लेकिन इसके टेढ़ापन के मूल कारण को हम समझ नहीं पाते। अर्थात साक्षात अनुभूति विषय जो छड़ी है और दूसरी अनुभूति है, जो जल है और किरणों के बीच विभेद की अज्ञानता ही इस भ्रम का कारण है।

इसी प्रकार दो भिन्न भूत की अनुभूतियों के बीच विभेद की अज्ञानता भ्रम का कारण है, जैसे – रज्जु में सर्प का अभाव। इसमें भी दो तरह के ज्ञान का सम्मिश्रण पाया जाता है एक लम्बी और टेढ़ी सी वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान और पूर्वकाल में प्रत्यक्ष हुए सर्प की स्मृति में दोनों सत्य है, केवल स्मृति दोष यह भूल जाते हैं कि वह सर्प स्मृति का विषय है, प्रत्यक्ष का नहीं। अर्थात प्रत्यक्ष और स्मृति के भेद का अनुभव नहीं होता, इसलिए हम रज्जु के प्रति वैसा व्यवहार करते हैं। इसलिए प्रभाकर के अनुसार भ्रम का कारण Misapprehension नहीं है। कभी-कभी ऐसा नहीं लगता कि रस्सी को हम सर्प के रूप में देखते हैं। यह सही है कि हमें भ्रम होता है, पर ऐसा नहीं लगता कि हम शिप खाड के जगह चाँदी देखते हैं जिससे हम यह

कहें कि यह अबोध है, बल्कि हमारे मानस पटल के सामने चाँदी की ही छाया रहती है, इसलिए उसे हम चाँदी के रूप में ही जानते हैं और यही कारण है कि प्रभाकर ज्ञान को स्वभाविक रूप से सत्य मानते हैं। यह चाँदी है जो भ्रमात्मक है, इससे हमें प्रथम चरण का ज्ञान नहीं होता बल्कि इसे हम सत्य एवं वास्तविक मानते हैं। यह ज्ञान मिथ्यात्मक एवं भ्रमात्मक है, इसका ज्ञान जब हम निकट जाते हैं, तब होता है, इसलिए प्रभाकर प्रत्यक्ष ज्ञान को स्वभाविक रूप से सत्य मानते हैं।

— To be continued —